ग्यालशिंग जिले के अंतर्गत सिक्किम सरकार के मत्स्य पालन विभाग ने एनईएच के तहत कार्प बीज वितरित करके ग्यालशिंग मत्स्य कार्यालय में तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण

भा कृ अनु प - केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान कोलकाता केंद्र ने 29 सितंबर से 1 अक्टूबर, 2024 के दौरान ग्यालशिंग, पश्चिम सिक्किम के 20 मछली किसानों के लिए 'मीठे पानी की जलीय कृषि के आधुनिक तरीकों' पर तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया । प्रशिक्षण जिला मत्स्य कार्यालय, ग्यालशिंग, पश्चिम सिक्किम में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का आयोजन सिक्किम सरकार के मत्स्य विभाग के उप निदेशक श्री दुचेन लेप्चा और सहायक निदेशक श्री लाहंग लिंबू की उपस्थिति में किया गया। डॉ. सुमन मन्ना और आईसीएआर-सीआईएफई कोलकाता केंद्र की वैज्ञानिक श्रीमती स्वेता प्रधान ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन किया।

उद्घाटन सत्र में श्री दुचेन लेप्चा ने किसानों को सिक्किम में जलीय कृषि की वर्तमान स्थिति और भविष्य के परिदृश्य के बारे में जानकारी दी। तकनीकी सत्रों में किसानों को कार्प की खेती और प्रजनन, जलीय कृषि में चारा और चारा प्रबंधन का महत्व, तालाब प्रबंधन और विभिन्न जल और मिट्टी की गुणवत्ता मापदंडों के रखरखाव के बारे में जानकारी दी गई ताकि वे वैज्ञानिक मछली पालन को अपनाकर अधिक लाभ कमा सकें। सीआईएफई जलीय कृषि परीक्षण किट का उपयोग करके पीएच, डीओ, अमोनिया आदि जैसे जल गुणवत्ता मापदंडों का व्यावहारिक प्रदर्शन किसानों को खेत के तालाबों और टैंकों में दिखाया गया । मछली रोग प्रबंधन, एकीकृत मछली पालन, जीएआईएस और पीएमएमएसवाई जैसे अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं को भी शामिल किया गया ताकि किसान अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकें और किसान परिवार की पोषण, आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा के साथ-साथ आजीविका में सुधार कर सकें। समापन कार्यक्रम में सिक्किम सरकार के मत्स्य विभाग के संयुक्त निदेशक श्री लोबसंग तमांग ने किसानों को वैज्ञानिक कार्प खेती के बारे में संबोधित किया और किसानों से आग्रह किया कि वे प्रशिक्षण से सीखे गए ज्ञान को अपने तालाबों में लागू करें । फीडबैक सत्र में किसानों ने प्रशिक्षण से प्राप्त परिणामों पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की और वैज्ञानिक मछली पालन को अपनाने के लिए प्रेरित किया । प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में किसानों के बीच प्रशिक्षण प्रमाण पत्र, मैनुअल, सीआईएफई पीएच किट और कार्प बीज वितरित किए गए।

(Source: ICAR-Central Institute of Fisheries Education, Mumbai)